उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
दिगंत - भाग - 2 गद्य भाग
शीर्षक - उसने कहा था
लेखक - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

प्रश्न:- पाठ में लहना सिंह और सूबेदारनी के संवादों को एकत्र करें।

उत्तर:- 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी में लहना सिंह और सूबेदारनी के बीच हुए संवादों को कहानीकार ने रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। लहना सिंह सात दिन की छुट्टी लेकर घर आया हुआ था। सूबेदार के आग्रह पर वह लौटते समय वह सूबेदार के यहाँ होते हुए आया। सूबेदार की पत्नी ने उसे पहचान लिया। सत्ताइस साल पहले बारह वर्ष की आयु में लहना सिंह की भेंट एक आठ वर्ष की बालिका (अब सूबेदार की पत्नी) से अपने मामा के यहाँ भेंट हुई थी। आज वह सूबेदार की पत्नी है।

उसी समय सूबेदार की पत्नी कहती है- " मैंने तेरे को पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। अब दोनों जाते हैं, मेरे भाग! तुम्हें याद है एक दिन टाँगेवाले का घोड़ा दही वाले के दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। आप घोड़े की लातों में चले गये थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।" सूबेदारनी तथा लहना सिंह दोनों की आँखों में आँसू आ गये।" लहना सिंह ने उसकी मौन स्वीकृति आँसुओं में ही दे दी तथा अपने प्राणों की बलि देकर अपने प्रण का पालन किया।

डॉ० देव चरण प्रसाद 15/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ड० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
निबंधमाला – गद्य खण्ड
शीर्षक – कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता
लेखक – आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

लघु प्रश्नोत्तर –

प्रश्न:- उर्मिला के चरित्र के सम्बन्ध में लेखक का क्या कहना है?

उत्तर:- निबंधकार आचार्य महावीर प्रसाद का कहना है कि उर्मिला का चरित्र कोई साधारण चरित्र नहीं था उन्होंने यहाँ तक कहा है कि उर्मिला का चरित्र कीट-पतंगों का चरित्र नहीं था। वह इतना नगण्य नहीं था कि कवियों का ध्यान उधर नहीं जाता। वह धरती से भी भारी और हिमालय से भी ऊँचा था, किन्तु यह आश्चर्यजनक है कि राम और सीता का आख्यान लिखने वाले वाल्मीकि, भवभूति और तुलसी जैसे कवियों ने उर्मिला को पर्दे में ही छोड़ दिया। यह उनकी उच्छृंखलता ही थी।

प्रश्न:- महर्षि वाल्मीकि के विचारों के प्रति लेखक का क्या मत है?

उत्तर: निबंधकार द्विवेदी जी कहना है कि महर्षि वाल्मीकि जी ने उर्मिला की उपेक्षाकर अच्छा नहीं किया, क्योंकि उस नववधू का त्याग-तप अनूठा था। वाल्मीकि ने जनकपुर में केवल एक बार वधू वेश में उर्मिला को दिखाया फिर चुप हो गये। उन्हें वह न तो लक्ष्मण के वन प्रयाण के समय दिखाई पड़ी, न राम की राजगद्दी के उल्लासपूर्ण वातावरण में। वह उन्हें तब भी दिखाई नहीं पड़ी जब उसके पति उसकी बहन और उसके प्राणों से प्रिय पति के अग्रज रामचन्द्र जी वन जाने लगे। वह किस तरह छिन्न मूल लता की तरह भूमि पर लोटकर विलख रही थी. वाल्मीकि को यह भी दिखाई नहीं पड़ा। आचार्य द्विवेदी ने लिखा है कि जिस दिन राम और लक्ष्मण सीता जी के साथ अपने राज को छोड़कर वन जा रहे थे उस दिन भी वाल्मीकि को उर्मिला की याद नहीं आयी। उसकी क्या दशा थी, सो कुछ भी आपने नहीं सोचा। इतनी उपेक्षा क्यों।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 15/10/20
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

## जयद्रथ-वध

कवि- मैथिलीशरण गुप्त - भावार्थ

अपने जनों द्वारा उठाकर समर से लाये हुए,
व्रण-पूर्ण निष्प्रभ और शोणित पंक से छाये हुए,
प्राणेश-शव के निकट जाकर चरम दुख सहती हुई,
वह नव-वधू फिर गिर पड़ी "हा नाथ! हा" कहती हुई।

भावार्थ:- 'उत्तरा' विलाप करती-करती मूर्च्छा की स्थिति में पहुँच जाती है। जब उसकी मूर्च्छा टूटती है तब वह शिविर से बाहर निकली तब तक अभिमन्यु का शव भी वहाँ पहुँच जाता है।

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि कहता है कि अपने ही लोगों द्वारा युद्धभूमि से उठाकर लाये हुए अभिमन्यु के शव के निकट उत्तरा पहुँची। वहाँ उसने देखा कि उसका शव अनेक घावों से युक्त था। चेहरा तेजहीन था तथा सारा शव खून की कीचड़ में लथ-पथ था। वह अपने पति के शव के निकट बहुत अधिक दुःख सहन करती हुई आ पहुँची। वहाँ पहुँच कर उस शव को निहार कर हा नाथ! हा! कहती हुई वह नव-वधु फिर वहीं गिर जाती है।

इस पद में महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने नव-वधू उत्तरा के विलाप का मार्मिक दृश्य उपस्थित किया है। यह घटना पाठकों को करुणा से भर देता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 15/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ